<u>जिला वेबसाइट पर डालने हेतु</u>

धार्मिक देवघर का ऐतिहासिक चेहरा

'इतिहासघर'

इतिहासप्रेमियों/विरासतप्रेमियों के लिए एक जीवंत केन्द्र!

- **पृष्ठभूमि**- देवघर बाबा वैद्यनाथ की नगरी के रूप में देश-दुनिया में विख्यात है। श्रावणी माह में लाखों कांवरिये बाबा वैद्यनाथ के कामनालिंग के जलाभिषेक के लिए उत्तरवाहिनी गंगा का पावन जल लेकर यहां आते हैं। नाना प्रकार के कष्ट सहकर भी वे अपने होंठों की मुस्कान नहीं खोते और अपनी आस्था की कठिन परीक्षा देते हैं। बाबा वैद्यनाथ मंदिर के अतिरिक्त भी यहां देवसंघ आश्रम, पागल बाबा मंदिर, सतसंग आश्रम, हाथी पहाड़, हरलाजोड़ी मंदिर, रिखिया आश्रम, नवलखा मंदिर, कुण्डेश्वरी मंदिर (यहीं नवग्रह मंदिर भी है), तपोवन, लीला मंदिर, त्रिकूट पर्वत सहित अनेक दर्शनीय धार्मिक स्थल विद्यमान हैं।

  पर, धार्मिक पृष्ठभूमि के अतिरिक्त देवघर की अपनी ऐतिहासिक पहचान भी है। यहां के वैद्यनाथ मंदिर के निर्माण का अपना इतिहास है। यहां अनेक पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक धरोहर, मूर्त्तियां, शिलालेख और अन्य प्रतीक विद्यमान हैं। इसके साथ ही अनेक महापुरुष भी समय-समय पर देवघर आकर यहां का महत्त्व बढ़ाते रहे हैं। इन सबको ऐतिहासिक चित्रों के माध्यम से **'इतिहासघर'** में सहेजा गया है।

- **कहां है 'इतिहासघर'**- देवघर के कालीराखा में पहले 'राजकुमारी कुष्ठ सेवाआश्रम' था। अब यह सिविल सर्जन का कार्यालय है। इसी कार्यालय परिसर में 'भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी' का भवन है। इस भवन के ऊपरी माले पर **'इतिहासघर'** अवस्थित है।
- **कैसे पहुंचे**- देवघर-दुमका मेन रोड पर झौंसागढ़ी के निकट 'बरगाछ हनुमान मंदिर' है। यहां से दायीं ओर कालीराखा स्थित सिविल सर्जन कार्यालय के लिए पक्की सड़क जाती है। बरगाछ हनुमान मंदिर से किसी भी तरह के वाहन से अथवा पैदल यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है। करनीबाग की ओर से आनेवाले या तो 'शहीद-आश्रम' के बगल से यहां आ सकते हैं या फिर वसंत कुमार दे लेन, ढिबी पोखर होते हुए जमुनाजोर पुलिया पार कर लक्ष्मी देवी सर्राफ संस्कृत महाविद्यालय होते यहां पहुंच सकते हैं। पानी टंकी (पालिका बाजार) की ओर से जून पोखर होते हुए कालीराखा आया जा सकता है।

Save your History and Heritage!

- **कब से आरंभ हुआ 'इतिहासघर'**- इस **'इतिहासघर'** की स्थापना के लिए देवघर के वर्त्तमान युवा उपायुक्त श्री अमीत कुमार ने सार्थक पहल की है। इस क्रम में **'इतिहासघर'** का शुभ उद्घाटन अनेक इतिहासप्रेमियों की आत्मीय उपस्थिति में दिनांक 14 जनवरी, 2015 (मकर संक्रांति) को देवघर उपायुक्त **श्री अमीत कुमार** के कर कमलों से संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में देवघर विधायक माननीय **श्री नारायण दास** उपस्थित थे।
- **'इतिहासघर' संस्थापक**- झारखण्ड शोध संस्थान के सचिव एवं देवघर के प्रमुख लेखक तथा शोधकर्त्ता **उमेश कुमार**
- **संपर्क-सूत्र- उमेश कुमार,** सचिव, झारखण्ड शोध संस्थान, राम मंदिर रोड, झौंसागढ़ी,
  बी.देवघर- 814112, चलभाष- 9931656484, 9122005155, email <umeshjharkhand@gmail.com
- **अभी यहां क्या-क्या है प्रदर्शित**- इस **'इतिहासघर'** में 30 x 20 साईज के एक तथा 20 x 10 साईज के दूसरे हॉल के साथ लगभग 25 x 15 के बरामदे में देवघर के पुरातत्त्व और इतिहास संबंधी तस्वीरें प्रदर्शित की गई हैं।

यहां फिलहाल 4 x 2 तथा 3 x 2 साईज की लगभग 70-80 दर्शनीय तस्वीरें (लोहे के एंगलयुक्त स्टील फ्रेमिंग फ्लैक्स फोटो) रखी गई हैं। ये चित्र मुख्यत: बाबा वैद्यनाथ के कामनालिंग के पुरातत्त्वीय पक्ष / वैद्यनाथ मंदिर के स्थापत्य / इसकी शैली /यहां के शिलालेख (13वीं शताब्दी)/ यहां की कुछ उल्लेखनीय मूर्त्तियों- वीणाधर शिव (10वीं शताब्दी)/वीणाधर शिव और सप्त मातृकाएं (8वीं शताब्दी)/ उत्तरगुप्तकालीन बुद्ध/पद्मपाणि अवलोकितेश्वर (गुप्तकालीन) तथा अन्य धरोहरों की जानकारी देते हैं। कुछ चित्र नष्टप्राय पुरातात्त्विक/ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति समाज और शासन का ध्यान आकृष्ट करने के लिए तैयार किए गए हैं, क्योंकि यदि बिना समय गंवाये इनका संरक्षण न किया गया तो इनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इनमें चाला शैली का तट मंदिर (लगभग 400 साल पुरानी धरोहर)/राजा मानसिंह के बनवाए घाट (16वीं शताब्दी)/1857 की क्रांति में भारतीय सैनिकों के हाथों मारे गए अंग्रेजों की कब्रें (इन विदेशिययों की कब्रों से 1857 की क्रांति में भारतीय सैनिकों के शौर्य का पता चलता है) प्रमुख हैं।

'इतिहासघर' में ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के देवघर-आगमन (1863 ई. और 1868 ई.) के साथ-साथ माता शारदा (1886 और 1889 ई.), स्वामी विवेकानंद (1887/1889/1890/1898, जनवरी/1898, दिसम्बर तथा 1900 ई.), महात्मा गांधी (1925 और 1934 ई.), नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की संताल परगना-यात्रा (1940 ई.), उपन्यासकार शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय (1937 ई) आदि की देवघर-यात्रा की जानकारी मिलती है। अभी अनेक चित्र निर्माण की प्रक्रिया में हैं। इस **'इतिहासघर'** में

देवघर से संबंधित ऐतिहासिक महत्त्व की अनेक पुस्तकें/अभिलेख तथा उनकी प्रतिकृतियां रखी जा रही हैं। जल्दी ही भौतिक अवशेष आदि भी यहां सहेजे और प्रदर्शित किए जाएंगे। **'देवघर म्यूजियम' की स्थापना की दिशा में यह देवघर के साधनहीन सेवक उमेश कुमार का एक छोटा-सा विनम्र प्रयास है।**

- **'इतिहासघर' का उद्देश्य**- जन समुदाय, विशेषकर युवा वर्ग में अपने क्षेत्रीय इतिहास, पुरातत्त्व और संस्कृति के प्रति आदर तथा संरक्षण की भावना पैदा करना। उन्हें देवघर सहित झारखण्ड की शानदार विरासत से अवगत कराना।
- **'इतिहासघर' खुलने का समय**- सुबह 10 बजे से संध्या 5 बजे तक। सोमवार को बंद।
- **प्रवेश**-नि:शुल्क।

(उमेश कुमार)
सचिव
झारखण्ड शोध संस्थान
राम मंदिर रोड, झौंसागढ़ी, बी.देवघर- 814112
चलभाष- 9931656484, 9122005155
email <umeshjharkhand@gmail.com

(संबंधित चित्र बाद में भेजूंगा।)

Save your History and Heritage!